I

Lecture Series No 62.

Online Class,
Date - 31-1-2020
Time - 10 to 10:30

Topic,

(1) Yoga,

Dr. Sunita Kumari
Department of Philosophy.
B.A Part - I
Paper - (S.)
A.N.S. College Shahpur
Patory, Samastipur,

Ans:- पतंजलि को योग दर्शन का प्रणेता माना जाता है। इन्हीं के नाम पर इस दर्शन को पातंजल दर्शन भी कहा जाता है। योग दर्शनों की भाँति मोक्ष की प्राप्ति को जीवन का चरम लक्ष्य मानता है।

यहाँ मोक्ष की प्राप्ति के लिए विवेक को ही पर्याप्त नहीं (मानता) माना गया है बल्कि योगाभ्यास पर भी बल (दिया जाता है) दिया गया है, योगाभ्यास पर जोड़ देना इस दर्शन की खास विशेषता है। इस प्रकार योग दर्शन में व्यवहारिक पक्ष

P.T.O.

अत्यधिक प्रधान है। यद्यपि योग दर्शन प्रणेता पतंजलि को माना जाता है। लेकिन योग दर्शन अपने विश्रृंखलित (बिखरे रूप में) रूप में वेदों, उपनिषदों और सूत्रों में भी प्राप्त होता है।

योग दर्शन पतंजलि की कोई स्वतंत्र या मौलिक कृति नहीं अपितु भारतीय दर्शन की अत्यंत प्राचीन और समीचीन सम्पत्ति है। पतंजलि ने इसी सामग्री को एकत्रित करके उसे अपने मौलिक विचारों से सजाकर व्यवस्थित रूप दिया।

सांख्य और योग दर्शन में अत्यन्त ही निकटता का संबंध है। जिसके कारण दोनों दर्शनों को समानतंत्र (A Mixed system) कहा जाता है। सांख्य के तत्व विचार का व्यवहारिक प्रयोग ही योग

P.T.O.

है। योग दर्शन सांख्य की तरह द्वैतवादी है। सांख्य के तत्वशास्त्र को वह पूर्णतः मानता है। सांख्य के अनुसार तत्वों की संख्या पच्चीस है। इन तत्वों में तत्व ईश्वर को जोड़ देता है। इसलिए योगदर्शन को ईश्वर सांख्य कहा जाता है। योग दर्शन ईश्वर को जोड़ देता है। इसलिए योगदर्शन को ईश्वर सांख्य कहा जाता है।

योग दर्शन ईश्वर की सत्ता को मानकर ईश्वरवादी दर्शन के रूप में अपने को प्रतिष्ठित करता है।

योग दर्शन में मूलतः ईश्वर का व्यवहारिक महत्व है। योगदर्शन का मुख्य उद्देश्य चित्तवृत्तियों का निरोध है। जिसकी प्राप्ति ईश्वर प्रणिधान से ही संभव माना गया है।

END